कलीसिया अध्याय 42

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[मनन का समय]* **1यूहन्ना 4-5, 2यूहन्ना, 3यूहन्ना**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (1यूहन्ना 4-5, 2यूहन्ना, 3यूहन्ना) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही माता-पिता]* **(3)श्रंखला ज का पुनरावलोकन करें**

दो-दो के समूह में **ज श्रंखला** के पाँच बाइबल पदों का पुनरावलोकन करें **''मसीही अभिभावक''**।
(1) खर्च करने के द्वारा प्रेम. 2कुरि. 12:14ब-15अ. ''क्योंकि बच्चों को माता-पिता के लिये धन बटोरना नहीं चाहिए, पर माता-पिता को बच्चों के लिये। मैं तुम्हारी आत्माओं के लिए बहुत आनन्द से खर्च करुँगा, वरन् आप भी खर्च हो जाऊँगा।''
(2) सभी क्षेत्रों में विकास करके. नीतिवचन 22:6. ''बच्चे को उसी मार्ग की शिक्षा दें जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा।''
(3) परमेश्वर के वचन को सिखाएं. व्यवस्थाविवरण 6:6-7. ''और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें(और तू इन्हें अपने बाल बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर पर बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना।''
(4) प्रभु में ले कर आएं. इफिसियों 6:4. ''हे बच्चेवालों, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ, परन्तु प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन-पोषण करो।''
(5) अनुशाासन के द्वारा प्रेम करें. नीतिवचन 13:24. ''जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उस से प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है।''

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 19**

परिचय दें। **यूहन्ना 19:1-42** को साथ में पढ़ने के लिए पाँच चरणों के अध्ययन का उपयोग करें। यूहन्ना के अध्याय 19 में, यीशु रोमी सिपाहियों के द्वारा *सताये जाते* हैं, यहूदियों के द्वारा क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए *तिरस्कृत* कर दिये जाते हैं, और खोपड़ी नामक स्थान, जिसे गुलगुता भी कहते है, पर रोमी सिपाहियों के द्वारा क्रूस पर चढ़ा दिये जाते हैं, और उसकी मृत्यु के बाद, अरामत्तियाह का यूसुफ और निकेदिमुस

नामक दो चेलों के द्वारा एक बड़ी नई कब्र में *दफना* दिये जाते हैं। यहूदियों ने यीशु को मारे जाने के लिए तिरस्कृत(इंकार) कर दिया और गैर यहूदियों ने उस मृत्यु के कार्य को पूरा किया। यह मानवीय इतिहास में घटित होने वाली महानत्म् घटना का प्रथम भाग है!

यीशु *शहीद* थे (19:1-7, मत्ती 27:22-23,27-30, मरकुस 15:12-14,16-19, लूका 23:20-22)
यीशु की *निंदा* की गई थी (19:8-16अ, मत्ती 27:24-26,31, मरकुस 15:15,20, लूका 23:23-25)
यीशु को *क्रूस* पर चढ़ाया गया था (19:16ब-37, मत्ती 27:32-56, मरकुस 15:21-41, लूका 23:26-49)
यीशु को *दफनाया* गया था (19:38-42, मत्ती 27:57-66, मरकुस 15:42-47, लूका 23:50-56)

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 19:1-42 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

19:4-12

खोज 1. यीशु की पूर्ण निर्दोशता।

(1) गर्वनर ने यीशु को पूर्ण रुप से निर्दोश घोषित किया।

यह अद्भुत है कि पिलातुस के सम्मुख परिक्षण के दौरान कितनी ही बार उसने यीशु को पूर्ण रुप से निर्दोश माना! गर्वनर यीशु को इस उद्देश्य से बाहर ले आया कि लोगों कि सम्मुख उस को प्रस्तुत कर यह बता सके कि वह यीशु में कोई भी दोष नहीं पाता! यूहन्ना के सुसमाचार में तीन बार वह कहता है, ''मैं तो उसमें कुछ दोष नहीं पाता!''(यूहन्ना 18:38, 19:4,6)।

और तीन बार लूका के सुसमाचार में वह कहता है, ''मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता'' (लूका 23:4)। ''तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैं ने तुम्हारे सामने उसकी जाँच की, पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो उन बातों के विषय में मैं ने उसमें कुछ भी दोष नहीं पाया है, न हेरोदेस ने; क्योंकि उसने उसे हमारे पास लौटा दिया है: और देखो, उससे ऐसा कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु के दण्ड के योग्य ठहराया जाए'' (लूका 23:14,15)। और तीसरी बार वह उन से बोला, ''क्यों, उसने कौन सी बुराई की है? मैनें उसमें मृत्यु के दण्ड के योग्य कोई बात नहीं पाई'' (लूका

23:22)। इस प्रकार, परमेश्वर ने स्वयं ही, सर्वोच्च मानवीय अधिकारी से यीशु की परिपूर्ण निर्दोषता घोषित करवा दी।

परन्तु यदि यीशु निर्दोष थे तो, किस प्रकार एक धर्मी परमेश्वर उसकी मृत्यु की अनुमति दे सकता था? इसका उत्तर केवल यशायाह 53:6,8 में मिलता है, ''...यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी'' (1कुरि. 2:8 में भी)। यह ही वह दिव्य कारण था जिसकी वजह से यीशु को छोड़ा नहीं गया था! यीशु मसीह पूर्ण रुप से निर्दोष थे और तौभी वह हमारे पापों के लिए प्रायश्चित रूपी बलिदान होकर हमारे स्थान में मरे।

(2) गर्वनर परमेश्वर से डरने से अधिक लोगों से डरा।

जब गर्वनर को असली कारण मालूम हुआ कि क्यों यहूदी यीशु को मारना चाहते हैं क्योंकि उसने परमेश्वर के पुत्र होने का दावा किया था, तो वह डर गया। पिलातुस परमेश्वर के आत्मिक संसार और यहूदियों के राजनीतिक संसार दोनों से डर गया। पिलातुस बहुत ही अंधविश्वासी था और इस बात से डरा हुआ था कि कहीं वह किसी अंजान ईश्वर को नाराज न कर दे। वह यीशु को महल में ले गया और उस से पूछा तू कहाँ से आया है। यदि उस ने यीशु को पहले सुना होता, तो वह जान गया होता कि यीशु स्वर्ग से पृथ्वी पर आत्मिक राज्य स्थापित करने आया है (यूहन्ना 18:36,37)। परन्तु इस समय, यीशु ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। गर्वनर किसी भी उत्तर के लायक नहीं था, क्योंकि यद्यपि लोगों के सम्मुख उसने बार-बार यीशु की निर्दोषता की घोषण की, अभी भी वह यीशु को कोड़े लगवा कर मृत्यु के निकट ले जा रहा था! गर्वनर सरासर भ्रष्ट, असत्यवादी और भरोसे के लायक नहीं था। गर्वनर यहूदियों से भी डर गया था। वह इस बात से डर गया था कि यहूदी रोमी सम्राट के सामने उस पर दोष लगाएंगे और वह अपनी राजनीतिक पदवी और यहाँ तक कि अपने जीवन को भी खो देगा। यह ही वह मानवीय कारण था कि यीशु को क्यों नहीं छोड़ा गया।

19:30

खोज 2. यीशु के क्रूस पर कहे गये अन्तिम वचनों का अर्थ।

(1) यीशु के क्रूस पर कहे गये सात वचन।

चारों सुसमाचारों से यह पता चलता है कि यीशु ने कम से कम सात वचनों को क्रूस पर से बोला।

- परमेश्वर पिता से उसने कहा, ''हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे है।'' (लूका 23:34)
- एक डाकू को उसने कहा, ''आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।'' (लूका 23:43)
- मरियम को उसने कहा, ''हे नारी, देख यह तेरा पुत्र है।'' और यूहन्ना से कहा ''यह तेरी माता है।'' (यूहन्ना 19:26,27)
- परमेष्ठवर पिता को उसने पुकारा, ''हे मेरे परमेष्ठवर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (मत्ती 27:46)

- सिपाहियों से उसने कहा, ''मैं प्यासा हूँ।'' (यूहन्ना 19:28)
- तब उसने कहा, ''पूरा हुआ।'' (यूहन्ना 19:30)
- और उसके अन्तिम वचन थे, ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।'' (लूका 23:46)

(2) उद्धार का कार्य पूरा हुआ।

जब यीशु ने कहा, ''पूरा हुआ'' *और हमेशा के लिए पूरा ही रहेगा* (यूनानी: टेटेलेस्ताई) (पूर्ण काल *परफेक्ट टेन्स*), तब उस का अर्थ यह था कि उ)ार का उसका कार्य पूरा कर लिया गया है। यीशु मसीह के मन मस्तिष्क में, उसकी मृत्यु और क्रुनाया जाना इतना पक्का था कि वह उसके बारे में ऐसे बोल सकता था जैसे कि वह सही में पूरा हो गया हो! यीशु मसीह के पूर्ण किये गये कार्य में पृथ्वी पर कोई मनुष्य कुछ भी जोड़ नहीं सकता था! जब कोई बचाया जाता है, तो वह केवल यीशु मसीह के क्रूस पर पूर्ण किये गये कार्य की वजह से बचता है न कि उस किसी भी काम से जो उसने स्वयं किये हों! कोई भी धर्मी व्यक्ति धर्म के काम करने से नहीं बचेगा (इफिसियों 2:8,9)। कोई भी धर्मी व्यक्ति प्रति दिन प्रार्थना करके, लगातार उपवास रख कर, धार्मिक कार्यो के लिए धन देकर या तीर्थ यात्राएँ करके नहीं बचेगा। कोई भी आतंकवादी इस लिए स्वर्ग में नहीं जाएगा क्योंकि उसने पवित्र युद्ध में अपने प्राण खोए हैं! गलातियों 2:16 स्पष्ट रुप से कहता है, ''व्यवस्था के कामों से कोई भी धर्मी नहीं ठहरेगा!''

(3) अपने मानवीय स्वभाव के कारण यीशु ने दु:ख सहा और मारे गए।

जब यीशु ने अन्त में अपनी आत्मा परमेश्वर पिता के हाथों में सौंप दी, यह दर्शाता है कि कोई भी यीशु से उन का जीवन नहीं ले सकता था, परन्तु उसने स्वेच्छा से अपने जीवन को दे दिया (यूहन्ना 10:17,18)। वह मरा जिस से जो उस पर विश्वास करते है जीवन पाएं! वह विश्वासियों *के लिए* और विश्वासियों *के बदले* मारा गया! और जब उस ने स्वयं को परमेश्वर पिता के हाथों में सौंपा, ये यह दर्शाता है कि परमेश्वर पिता ने परमेष्ठवर पुत्र को कभी भी इंकार नहीं किया, उस सभी के स्थान पर जो उस पर विष्ठवास करेंगे उसने उसके पश्चताप के बलिदान को स्वीकार किया! यह इस बात को भी सिद्ध करता है कि अपनी मृत्यु और पुर्नरुत्थान के बीच में वह स्वर्ग में था और अधोलोक (पताल या मृत आत्माओं का स्थान) में नहीं गया लोगों को दूसार मौका देने के लिए।

कदम 3. प्रश्न।	व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 19:1-42 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

19:1-3

प्रश्न 1. **यीशु मसीह को किस प्रकार सताया गया था?**

ध्यान दें।

(1) यीशु को कोड़े मारे गये।

पिलातुस ने आज्ञा दी की यीशु को कोड़े मारे जायें। यीशु को मृत्यु दण्ड देने से बचने के लिए वह लगातार समझौते की खोज में रहा। उसे आशा थी कि लोग यीशु पर तरस खाऐंगे और उसको मृत्यु से बचा लेंगे। ''कोड़े लगवाना'' सताव का सबसे भयानक तरीका था। रोमी कोड़े में लकड़ी का एक छोटा हत्था होता था जिसमें एक पट्टा होता था जिसके छोर पर बहुत से कांटे होते थे और इन के कांटों की नोंक पर लोहे के या हड्डी के नुकिले टुकड़े लगे होते थे। कोड़े का चाबुक पूरी देह पर, परन्तु विशेषकर पीठ और नंगी देह पर मारा जाता था। देह इस हद तक उधड़ जाती या फट जाती थी कि गहरी रक्तवाहिनियाँ और यहाँ तक कि अंदरुनी अंग भी दिखने लगाते थे! बहुत बार इसका परिणाम मृत्यु भी होता था। जब कोड़े मारे जाना फांसी से पहले आता था, यह इस चिन्ह के रुप में होता था कि पीड़ित को क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। रोमी साम्राज्य में रोमी नागरिकों को कोड़े मारे जाने और क्रूसीकरण से छूट प्राप्त थी।

(2) यीशु को झूठे राज्याभिषेक की पीड़ा को सहना पड़ा।

सिपाही यीशु को आंगन में ही सताना चाहते थे। उन्होंने यीशु के सिर पर कांटों से तैयार मुकुट को पहनाया, जिससे रक्त यीशु के चेहरे पर से होकर बहने लगा। उन्होंने एक पुराने सिपाही के फेंके हुए कपड़े को यीशु के कांधो पर रख दिया और उसके हाथ में एक सरकण्डा पकड़ा दिया, उसको राजा के रुप में दिखने के लिए। वे बार-बार उसके सामने आकर मजाकिया सलामी देते और उसी समय पर उसके गाल पर थप्पड़ मारते थे।

19:10-11

प्रश्न 2. **यीशु को किस प्रकार डराया गया?**

ध्यान दें। राज्यपाल यीशु के उत्तर न देने की वजह से क्रोधित था। इस लिए उसने यीशु को डराना आरंभ किया। उसने यह कहा कि उसके पास यीशु को छोड़ देने का अधिकार और मृत्यु दण्ड देने का भी अधिकार है। तब यीशु ने विनम्रता पूर्वक उसे उत्तर दिया, ''यदि तुझे ऊपर से न दिया गया होता तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार नहीं होता।'' यीशु यह सिखाना चाहते कि यद्यपि राजनीतिक और सेना के अगुवों को पास सामर्थ और अधिकार होता है, वह परमेश्वर होता है जो उन्हें यह अधिकार और सामर्थ प्रदान करता है। राजनीतिक और सैन्य अधिकार और सामर्थ पवित्र भरोसा होता है जो सर्व सामर्थी परमेश्वर की ओर से पृथ्वी पर कुछ लोगों को प्रदान किया जाता है और वे किस प्रकार इसका प्रयोग करते हैं इसके लिए वे परमेश्वर के प्रति जवाबदेह होते हैं(रोमियों 13:1-7)।

लोग पूछते हैं, ''संसार में किसके पास असली सामर्थ है?'' बाइबल का लगातार संदेश यह है, कि शैतान और उसकी दुष्ट शक्तियाँ और उसके नियंत्रण में जो लोग है *उनके पास दुष्ट संसार में सीमित शक्तियाँ हैं* (1यूहन्ना 5:19), ''परन्तु स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी सामर्थ यीशु मसीह को दी गई है''(मत्ती 28:18)।

उसके पास कुँजी है जिसके खोले हुए को कोई बन्द नहीं कर सकता और बन्द किए हुए को कोई खोल नहीं सकता(प्रकाशितवाक्य 3:7-8)।

क्योंकि सभी सामर्थ यीशु मसीह से संबन्धित है भजन 2 इस संसार के राजनीतिक, सैन्य और धार्मिक अगुवों को सावधान करता है, ''इसलिये अब, हे राजाओं , बुद्धिमान बनों (हे पृथ्वी के न्यायियों, यह उपदेश ग्रहण करो। डरते हुए यहोवा की उपासना करो, और काँपते हुए मगन हो। और पुत्र को चूमो, ऐसा न हो कि वह क्रोध करे।, और तुम मार्ग ही में नष्ट हो जाओ, क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भड़कने को है। धन्य है वे जिनका भरोसा उस पर है।'' (भजन संहिता 2:10-12)

19:14-22

प्रश्न 3. **किस प्रकार यीशु का लोगों के समान मजाक उड़ाया गया?**

ध्यान दें।

(1) राज्यपाल के दृष्टिकोण से - यहूदियों का राजा।

यहूदी राज्यपाल को डराने वे कामयाब रहें और उन्होंने उस पर निर्दोष यीशु को मृत्यु दण्ड देने के लिए दबाव बनाया। परन्तु अब राज्यपाल ने इस अपमान को उन्हें वापस दिया लोगों के सामने यह कहते हुए, कि यीशु ''यहुदीयों का राजा'' है। यह ही वह अन्तिम बात थी जो यहुदी अगुवे सुनना चाहते थे और उन्होंने ऐसे ही राज्यपाल के मन को बदलने की कोशिश करी। क्योंकि यहूदीयों ने मसीह, यीशु को राजा स्वीकार करने से इंकार कर दिया, पिलातुस ने यहूदीयों पर दबाव बनाया कि वे सब के सामने यह स्वीकार करें के उनका राजा केवल सांसारिक रोमी सम्राट कैसर है: ''कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं है'' (यूहन्ना 19:15)!

राज्यपाल ने इस अपमान को यहूदी अगुवों को लौटाया एक दोषपत्र यह लिख कर लगवाते हुए, ''यीशु नासरी, यहूदियों का राजा''। इस दोषपत्र को यीशु के सीर पर टंगवा दिया गया (यूहन्ना 19:19)। अकसर दोषी का दोषपत्र जो उसको क्रूस पर चढ़ाने के लिए लगाया गया होता था उस पर लिखा होता था, परन्तु यीशु के मामले में वहां पर कोई भी दोष नहीं था! यहूदी अगुवे यह चाहते थे कि राज्यपाल यह लिखवायें कि यीशु ने कहा कि वह यहूदियों का राजा है। परन्तु ऐसे ही, राज्यपाल ने उस दोषपत्र को तीन भाषाओं में (इब्रानी, यूनान और लातानी) जो वहाँ पर उस समय प्रचलित थी लिखवा दिया (यूहन्ना 19:20)। हजारों-हजारों यहूदी उस मुख्य मार्ग से हो कर गुजरे और उस दोषपत्र को पढ़ा। वह दोषपत्र यहूदी अगुवों के अपमान करने के उद्देश्य से लगाया गया था। उन्होंने ही यीशु की मृत्यु के लिए दबाव बनाया था। अब उन्हें इस सच्चाई का सामना करना था कि उन्होंने अपने ही राजा को इंकार किया और क्रूस पर चढ़ा दिया!

(2) परमेश्वर के दृष्टिकोण से- पृथ्वी पर के सभी राजाओं का राजा।

यहूदी धार्मिक अगुवों ने सोचा कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाकर वे उस के छुटकारा पा जाएंगे। ऐसा की इस पापी संसार के अगुवों ने सोचा, क्योंकि पौलुस कहता है, ''यदि वे जानते जो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते (1कुरि. 2:8)! सामर्थी परमेश्वर ने यीशु मसीह में दिखने वाली हार को संसार के इतिहास की सबसे महान जीत में बदल दिया (1कुरि. 2:8)! यीशु मसीह की मृत्यु परमेश्वर की ओर से पाप का प्रायश्चित बन गई और पापी को स्वयं (परमेश्वर) और एक दूसरे के साथ मेलमिलाप में ले आई! यीशु के मृत्यु सभी पाप, सभी दुष्ट लोगों पर, पापी संसार पर और शैतान और उसकी सभी दुष्ट आत्माओं पर विजय बन गई! परमेश्वर के दृष्टिकोण से यीशु मसीह केवल ''यहूदियों के राजा'' ही नहीं, बल्कि ''पृथ्वी पर के सभी राजाओं का राजा'' हैं (प्रकाशितवाक्य 1:5, 17:14, 19:16)! अब से, स्वर्ग और पृथ्वी की सभी सामर्थ यीशु मसीह के पास है और मसीही कलीसिया के विकास के लिए वह संसार पर राज्य करता है (इफिसियों 1:19-20)।

19:17-18

प्रश्न 4. **यीशु को किस प्रकार क्रूस पर चढ़ाया गया?**

ध्यान दें। यूहन्ना कहता है कि यीशु ने पहले अपनी क्रूस को उठाया। परन्तु कोड़े कि मार के घावों की वजह से उसकी देह शीर्ण हो गई थी और क्रूस बहुत भारी हो गई थी। गुलगुता के मार्ग में क्या हुआ लूका 23 और भी विस्तार से व्याख्यानित करता है। उन्होंने शमौन जो कुरेनी का था क्रूस को उस पर लाद दिया कि उसके पीछे चले, एक बड़ी भीड़ भी उसके पीछे थी, और स्त्रियाँ विलाप कर रही थी। यीशु को दो डाकूओं के साथ जो उसके दोनो ओर थे क्रूस पर लटका दिया गया।

(1) क्रूस की बनावट।

क्रूस की बनावट के लिए बहुत कुछ लिखा गया है। कुछ लोग सोचते हैं कि यह अंग्रजी अक्षर **"X"** एक्स के आकार की थी और कुछ सोचते है कि यह **"T"** टी के आकार की थी, परन्तु सबसे सही 'रोमी डेगर' यानी तलवार के आकर की होती थी जिसमें एक ऊपर की ओर लम्बा खड़ा बीम और छोटा पड़ा बीम का आकार होता था, क्योंकि दोषपत्र को यीशु के सिर के ऊपर की ओर लगाया गया था (लूका 23:38)।

(2) क्रूसीकृत व्यक्ति किस प्रकार मरते हैं?

क्रूस के द्वारा मृत्यु यातना देने और मरने का सबसे विभत्स तरीका था। यह बहुत से प्राचीन राज्यों के द्वारा प्रयोग में लाया जाता था, परन्तु रोमी लोगों ने इसे केवल गुलामों और अपराधियों के लिए सीमित किया हुआ था। जब क्रूस ज़मीन पर पड़ी होती थी, तब रोमी सैनिक लम्बी कीलों को अपराधी के हाथ-पाँव में हथौड़े से ठोक देते थे। तब क्रूस को ऊपर की ओर उठा कर एक गढ्ढे में डाल दिया जाता था जो उसे सीधा खड़ा रहने में सहायता करती थी। पाँव एक तख्ते पर रखे होते थे जो ज़मीन से जयादा ऊपर नहीं होता था। क्रूसीकरण कहे न जा सकने वाली पीड़ा से भरा हुआ था: वहाँ पर बहुत सी जलन, घावों की सूजन, फट चुकी कोशिकाओं में असहनीय दर्द, कड़ाता हुआ सिर दर्द, प्यास और हिलने से होने वाली बे आरामी का भय, जब अपराधी प्रत्येक सांस को लेने के लिए कीलों पर टंगे हुए हिलना होता था।

(3) उसके क्रूसीकरण का अर्थ।

इन सब शरीरिक यातनाओं से अलग, यीशु मसीह को परोक्ष तौर पर संसार के पापों के लिए जो उसने अपने ऊपर ले लिए यातनाओं को सहना पड़ा (1पतरस 2:24)! क्रूस पर उसने अनुभव किया कि ''परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिये जाने'' का अर्थ क्या है। पुराने नियम में क्रूस पर चढ़ाए गय व्यक्ति के विषय में माना जाता था कि वह ''परमेश्वर की ओर से शापित'' है (व्यवस्थाविवरण 21:23)। नया नियम यह सिखाता है कि यीशु मसीह हमारे लिए शाप बन गया कि अब्राहम की आशीषें यहूदियों और गैर-यहूदियों को प्राप्त हो सकें (गलातियों 3:13-14)।

(4) क्रूसीकरण का स्थान।

यीशु मसीह को यरुशलेम *नगर के बाहर* क्रूस पर चढ़ाया गया और यह ''शापित'' होने का एक और चिन्ह था (लैव्यव्यवस्था 16:27, इब्रानियों 13:12-13)। यह स्थान ''खोपड़ी का स्थान'' कहलाता था। कोई भी एकदम सही स्थान के विषय में नहीं जानता और यह महत्वपूर्ण नहीं है कि उसके बारे में तर्क किया जाए कि वह कहां था (या तो चर्च ऑफ होली स्पलर्च या गॉर्डन कॉल्वेरी)। बाइबल इस प्रकार के स्थान को ''पवित्र'' नहीं मानती और इस स्थानों को ऐसा भी नहीं मानना चाहिए कि तीर्थयात्री यहाँ पर जाएँ।

(5) दो डाकूओं का क्रूसीकरण।

यीशु को दो डाकूओं के मध्य क्रूसीकृत किया गया (यशायाह 53:12)। संसार के दृष्टिकोण से यह यहूदियों को अपमानित करने के उद्देश्य से किया गया था। उसने राजा को *अपराधी* माना गया था। तौभी परमेश्र के दृष्टिकोण से यह एक सम्मान की बात थी, क्योंकि यीशु मसीह इस संसार के इस लिए आए कि ''पापियों को खोजें और उन्हें बचाएं'' (लूका 19:10)।

19:38-43

प्रश्न 5. यीशु को किस प्रकार दफनाया गया?

ध्यान दें। उसको अरिमतिया के यूसुफ और निकोदिमुस के द्वारा खुले तैर पर दफनाया गया। यूसुफ एक अमीर व्यक्ति था (मत्ती 27:57), परमेश्वर के राज्य की प्रतिक्षा करने वाला समर्पित व्यक्ति था (लूका 23:51), और महासभा का सदस्य था (मरकुस 15:43)। परन्तु वह पिलातुस के साथ यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सहमत नहीं था (लूका 23:51)। वह यीशु मसीह का गुप्त अनुयायी था, क्योंकि वह यहूदियों से डरता था। हो सकता है कि उसे डर हो कही यहूदी उसे महासभा और सिनेगॉग से निकाल न दें (सामाजिक बहिष्कार) (यूहन्ना 9:22)! जो भी हो, यीशु मसीह की प्रायश्चित मृत्यु और मसीहा के लिए उसका प्रेम इतना था कि वह बहुत सहासी बन गया। सब्त के आरंभ होने से पूर्व (शुक्रवार को सूर्य डूबने से पूर्व) वह हियाव के साथ पिलातुस के पास गया और यीशु के देह को मांग लिया(मरकुस 1:42-47)।

निकेदिमुस भी महासभा का सदस्य, फरीसी और निपुर्ण व्यवस्थापक और शिक्षक था। आरंभ में वह भी यहूदियों से डरा, परन्तु बाद में जब उसने महासभा के अधिकारियों को किस को सफाई का मौक दिए बिना न्याय करने पर सवाल उठा कर अपने सहास का परिचय दिया(यूहन्ना 7:50-52)।

इन दो व्यक्तियों ने यीशु की देह को क्रूस पर से लिया, उसकी देह पर मुल्यवाल इत्रों को मलकर कपड़े में लपेट कर एक नयी कब्र में जो यूसुफ की थी चट्टान में रखा और उसके मुंह पर पत्थर रख दिया (मत्ती 27:57-61)। इस से पहले किसी को भी इस कब्र में रखा नहीं गया था और यह उस स्थान के जहाँ पर यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था पास थी। उन्होंने प्रवेश द्वार को एक बड़े गोल लुड़कने वाले पत्थर से ढक दिया। बहुत सी स्त्रियाँ वहाँ पर मौजूद थी और देख रही थी कि उसको कहा पर दफनाया गया है।

19:24,36-37

प्रश्न 6. **बाइबल में इतनी सारी भविष्यद्वाणियों के पूरा होने का वर्णन क्यों है?**

ध्यान दें। भविष्यद्वाणियों का पूरा होना इस बात का प्रमाण है कि यीशु मसीह सही में परमेष्ठवर के पुत्र है। वैज्ञानिकों ने पुराने नियम में पाई जाने वाली 332 भविष्यद्वाणियों को गिना है जो यीशु में पूर्ण हुई है। मैनुअल 3, सप्लीमेंट 15 में यीशु के बारे में भविष्यद्वाणियों को देखें। उने गणना की है कि सांसारिक इतिहास में इनमें से 8 भविष्यद्वाणियाँ ही एक व्यक्ति में पूरी होंगी, उसका सौ हजार अरब(100000000000000000) में से एक ही मौका एसा होगा। केवल बाइबल का परमेष्ठवर ही भविष्यवाणी कर सकता है इस प्रकार उन्हें पूरा कर सकता है! कोई भी धार्मिक पुस्तक बाइबल के बराबर नहीं हो सकती!

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोच विचार करके यूहन्ना 19 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 19:1-42 तक के संभावित लागूकरण के उदाहरण।

19:1-3. 1 पतरस 2:21 कहता है, ''और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख: उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद चिन्हों पर चलो।'' यीशु को गिरफतार किया गया और सभा के सामने मुकदमा चला यद्यपि वह निर्दोष था! डसको कोड़ो से मारा गया जिससे उसकी पीठ उधड़ गई। उसको काँटो का मुकुट पहनाया गया। उसक चेहरे पर थप्पड़ मारे गये। अन्त: उसको क्रूस पर चढ़ा दिया गया। आपको भी अपने सताने वालों से इसी प्रकार के व्यवहार का अनुभव हो सकता है।

19:9. यशायाह 53:7 कहता है, ''वह सताया गया, तौभी सहता रहा और अपना मुँह न खोला(जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप रहती है, वैसे ही उसने

भी अपना मुँह न खोला।'' बहुत सी परिस्थितियाँ ऐसी होती है जिसमें अपना मुँह न खोलना बुद्धिमानी होता है।

19:11. सताव और यातनाओं से कोई फर्क नहीं पड़ता यदि आप विश्वास करते हैं कि आप के शत्रु की आप पर कोई सामर्थ नहीं है यदि परमेश्वर पिता ने उन्हें आप के साथ वैसा करने का अधिकार न दिया हो।

19:12. जब लोग छुपी हुई धमकियाँ दें तो कभी भी हिम्मत न छोड़े। अनैतिक दबाव के आगे न झुकें।

19:15. गलत लोगों को चुनाव करने का मौक न दें। वे बुरा चुनाव करेंगे।

19:25-27. अपने बुढ़े माँ-बाप के लिए इंतज़ाम करें। किसी को उनकी देखभाल का जिम्मा सौपें।

19:30. यीशु के समान, एक पूरा करने वाला बनने के लिए दृढ़ संकल्प हों(यूहन्ना 4:34, 17:4, कुलुस्सियों 4:17)।

19:30. जब आप की मृत्यु हो तब अपनी आत्मा को पिता परमेश्वर के हाथों में सौपें(लूका 23:46)।

19:36-37. पुराने नियम में यीशु मसीह के लिए की गई सभी भविष्यद्वाणियों का अध्ययन करें(देखें मैनुअल 3, परिशिष्ट 15)।

19:38-39. जब आप अभी भी यीशु मसीह के एक गुप्त चेले हैं, तो उस से मांगे कि वह आप को यूसुफ और निकोदिमुस के समान सहासी और हिम्मती बनायें।

2. यूहन्ना 19:1-42 में से व्यक्तिगत लागूकरण।

मैं सही में यह कल्पना नहीं कर सकता कि यीशु ने मेरी खातिर कितनी पीड़ा सही। यद्यपि मैं उसके सताव की एक मानसिक तसवीर बना सकता हूँ, मैं उसकी थाह नहीं ले सकता या दूसरों के बदले उसकी पीड़ाओं को महसूस नहीं कर सकता जब उसने मेरे पापों को अपने ऊपर ले लेने के कारण परमेश्वर के सम्पूर्ण पवित्र क्रोध को अपने ऊपर ले लिया था! मैं अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहता हूँ कि यीशु मसीह मेरे स्थान पर क्रूस पर चढ़ गया। मैं उसका धन्यवाद देता हूँ कि उसने मेरे सभी पापों के बदले प्रायश्चित चुका दिया। मैं उसका धन्यवाद देना चाहता हूँ कि परमेश्वर से मेरा मेल करा दिया। मैं उसका धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उसने मुझे अनन्तता के लिए बचा लिया!

मैं इस बात से बहुत प्रभावित हूँ कि किस प्रकार यीशु ने अपने सताव के दौरान व्यवहार किया। जब उस पर सवाल उठाए गए, उसने विनम्रता पूवर्क उत्तर दिया या शान्त रहा। जब उसका अपमान किया गया, उसने उसका प्रतिउत्तर नहीं दिया। जब उस पर यातनाएँ आयी वह डरा नहीं (1पतरस 2:23)। वह दर्द में चिल्लाया नहीं, परन्तु एक ममने के समान जो वध के लिए ले जाया जाता है व्यवहार किया (यशायाह 53:7)। कोई भी व्यक्ति वैसा नहीं कर सकता जैसा उसने किया! मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर मुझे और अनुग्रह देगा कि मैं यीशु की पीड़ाओं से सीख सकूँ।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये **यूहन्ना 19** में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।
(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 14 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रकाशितवाक्य 1-3** के आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें.** नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(16) यूहन्ना 16:8।**
   रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।
5. **प्रार्थना.** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है।(भजन संहिता 5:3)
6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **अपने लेखे का अद्यपन करें** । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।